Bharat Gyan Vigyan Samiti (BGVS)
Basement of Young Women's Hostel No. 2, G Block
Saket, New Delhi 110017, India
Tel (011) 26569943 Email: bgvs@vsnl.net

1. बिल्लियों की बारात: वैंडा गैग

सहयोग राशि: 12 रुपये

वैंडा गैग विश्व बाल साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार न्यूबेरी मैडिल से सम्मानित हैं। 1928 में, उन्होंने इस पुस्तक - 'मिलियंस ऑफ कैट्स' को लिखा था। इसके चित्र - जो कि वुडकट्स हैं, देखने योग्य हैं। पिछले 70 सालों में इस पुस्तक के अंग्रेजी में पचासों संस्करण छपे और सारी दुनिया में करोड़ों बच्चों ने इसका आनंद लिया। हिंदी में बाल साहित्य की यह अनूठी कृति पहली बार छपी है।

2. दानी पेड़ - शेल सिल्वरस्टाइन

सहयोग राशि: 10 रुपये

शेल सिल्वरस्टाइन की मूल कहानी 'दी गिविंग ट्री' से प्रेरित बेहद सुंदर कहानी। पेड़ हमें फल देते हैं, हमें छाँव देते हैं, घर देते हैं, नाव देते हैं, ऑक्सीजन देते हैं। परंतु हम उन्हें क्या देते हैं? पेड़ों की महत्वता और उनकी दयालू प्रकृति को उजागर करने वाली सदाबहार कहानी। एक ऐसी कहानी जो हर उम्र के इंसान को पसंद आएगी।

3. एक शाम जादूगर के साथ - जे. बी. एस. हैल्डेन

सहयोग राशि: 10 रुपये

सन् 1928 में 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' पहली बार छपी। इस पुस्तक को पढ़ कर सारी दुनिया के बच्चे गद्‌गद हो गए। मिस्टर लीकी एक नायाब पात्र हैं। उनको लेकर बच्चे, हैल्डेन को लगातार पत्र लिखते रहे। इसी संकलन में से ली गई एक बेहद पठनीय कहानी।

4. अक्षर चित्र - विष्णु चिंचालकर

सहयोग राशि: 10 रुपये

अक्षरों में न जाने कितने सारे जानवर, पक्षी, इंसान, घर आदि छिपे हैं। इस पुस्तक में युगपुरुष गुरुजी विष्णु चिंचालकर ने अक्षरों की केवल कुछ सम्भावनाएं दिखाई हैं। बच्चे खुद ही उनमें कितने नए-नए चेहरे खोजेंगे। धीरे-धीरे ये बेजान अक्षर बच्चों के गहरे मित्र बन जाएंगे।

5. अच्छा स्कूल - जॉन होल्ट

सहयोग राशि: 12 रुपये

'हाऊ चिल्ड्रन फेल' के लेखक, विश्व-प्रसिद्ध शिक्षाविद् जॉन होल्ट ने दुनिया के तमाम मंहगे और नामी-गिरामी स्कूलों को देखा पर वे उनके गले नहीं उतरे। पर डेनमार्क के एक छोटे-से गरीब स्कूल ने उनका दिल जीत लिया। यह दुनिया के बेहतरीन स्कूल की कहानी है। शिक्षा के लिए पैसों की नहीं, दर्शन और दृष्टि की आवश्यकता होती है। हरेक ज़िंदादिल शिक्षक और माता-पिता के लिए एक अनिवार्य पुस्तक।

6. मीश्का का दलिया - निकोलाई नोसोव

सहयोग राशि: 10 रुपये

रूस के मशहूर बाल लेखक निकोलाई नोसोव की दिलचस्प कहानी। एक दिन जब माँ बाहर चली जाती हैं तो दो मित्र मीश्का और कोल्या खुद खाना बनाने की कोशिश करते हैं। कितना दलिया लें और उसमें कितना पानी डालें इसका उन्हें कोई अंदाज नहीं होता है। दलिया पकाते-पकाते उन्हें नानी याद आ जाती है। उनके कारनामों की दास्तां इस कहानी में पढ़ें।

7. प्रमुख के नाम पत्र - चीफ सीएथल

सहयोग राशि: 10 रुपये

पर्यावरण पर पिछले डेढ़ सौ वर्षों में लिखा हुआ सबसे संजीदा दस्तावेज़। गोरी सरकार, अमरीका के मूल आदिवासियों की ज़मीन को, बंदूक की नोक पर हड़पना चाहती थी। तब आदिवासियों के एक सरदार - चीफ सीएथल ने अमरीकी राष्ट्रपति को यह पत्र लिखा। यह पत्र पश्चिमी उपभोक्तावादी संस्कृति पर एक करारा तमाचा है।

8. हमारी नाव चली - डॉ. एस. पी. खत्री

सहयोग राशि: 10 रुपये

छंदों में विज्ञान। इस पुस्तक में तैरने के सिद्धांत और नावों एवं जहाजों के इतिहास को बेहद रोचक और गेय छंदों में पेश किया गया है। एक बार सुनते ही बच्चों को ये छंद याद हो जाएंगे।

9. इक्का! ताँगा! मोटर! - डॉ. एस. पी. खत्री

सहयोग राशि: 10 रुपये

डॉ. खत्री को बहुत कम लोग जानते हैं। वो आजादी से पहले इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी पढ़ाते थे और हिंदी में कविता लिखते थे। इस पुस्तक को आज़ादी के दौर में लीडर प्रेस ने छापा था। इसमें यातायात का इतिहास, बहुत ही सुगम और सरल छंदों में दिया गया है।

10. स्वार्थी राक्षस - ऑस्कर वाइल्ड

सहयोग राशि: 10 रुपये

अमरीकी कहानीकार ऑस्कर वाइल्ड की मार्मिक कहानी 'द सेल्फिश जायंट' का हिंदी रूपांतरण। कहानी एक भयानक राक्षस और एक निरीह बच्चे की है। बच्चा अपनी सरलता, सहजता से राक्षस को अत्यंत मानवीय और दयालू बना देता है। दिल को छू लेने वाली दुनिया की जानी-मानी क्लासिक।

11. फुग्गे का वह दिन - जेम्स ए. स्मिथ

सहयोग राशि: 10 रुपये

यह एक जिज्ञासू बच्चे हेनरी की कहानी है। हेनरी हमेशा कुछ-न-कुछ वैज्ञानिक प्रयोग करता रहता है। एक दिन वो साबुन के घोल में कुछ कोलतार मिलाकर एक बहुत बड़ा साबुन का फुग्गा बनाता है। फुग्गा पहाड़ी से लुढ़कता हुआ और सारी दुनिया को लपेटता हुआ नीचे आता है। आगे का हाल जानने के लिए इस रोचक वैज्ञानिक कथा को पढ़ें।

12. विश्व की कहानी - डॉ. एस. पी. खत्री

सहयोग राशि: 10 रुपये

दुनिया कैसे बनी? इस पूरे ब्रह्मांड में हमारा स्थान कहाँ है? असंख्यों टिमटिमाते तारे क्या सूर्य हैं या ग्रह हैं? ऐसे प्रश्न हरेक बच्चे और इंसान के दिमाग में आते हैं। इस पुस्तक में सरल और गेय छंदों के ज़रिए विश्व की उत्पत्ति को समझाया गया है। इसमें एक ओर विज्ञान का ज्ञान है तो दूसरी ओर कविता का मनोरंजन है।

13. बच्चे कैसे बनते हैं? - एंड्रू एंड्री और स्टीवन शेप

सहयोग राशि: 12 रुपये

आज सारी दुनिया ऍडस और एच.आई.वी. जैसी भयंकर बीमारियों के ज्वालामुखी की कगार पर खड़ी है। परंतु बच्चों को बुनियादी सेक्स संबंधी शिक्षा से अब भी वंचित रखा गया है। इस चित्रात्मक किताब से बच्चे समझ सकते हैं कि पौधों में बीज कैसे बनते हैं, मुर्गी के चूज़े कैसे पैदा होते हैं और कुत्ते के पिल्ले कैसे जन्म लेते हैं। अंत में नन्हें-मुन्ने, मनुष्य के बच्चे दुनिया में कैसे जन्म लेते हैं, इसे समझाया गया है। आज के युग में बच्चों के लिए बेहद ज़रूरी किताब।

14. छिपा रहस्य - क्वेंटन रेनाल्ड

सहयोग राशि: 10 रुपये

घोड़ों पर आधारित दो रोचक अलग-अलग कहानियां। पहली कहानी एक बूढ़े गाड़ीवान और उसके घोड़े के बीच गहरे प्रेम के बारे में है। गाड़ीवान आंखों से देख नहीं सकता था परंतु घोड़ा उसका पथ प्रदर्शक था। दूसरी कहानी में, दो एक-समान घोड़ियां हैं। उनमें कौन माँ है और कौन बेटी है, इसका पता लगाना है। पूना के समझदार नाना पेशवा इसका हल कैसे खोजते हैं?

15. आखिरी पत्ता - ओ. हेनरी

सहयोग राशि: 10 रुपये

मशहूर कहानीकार ओ. हेनरी की विश्व विख्यात कृति 'द लास्ट लीफ' का हिंदी रूपांतरण। यह कहानी एक शराबी, बूढ़े असफल चित्रकार की है जो अपनी अंतिम मास्टरपीस कलाकृति - आखिरी पत्ते को पेंट करके, एक मासूम लड़की की जान बचाता है।

16. तोता - रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सहयोग राशि: 10 रुपये

शिक्षा के नाम पर स्कूलों में, लाखों-करोड़ों बच्चों की सृजना को, रोज़ाना कुचला जाता है। शिक्षा के नाम पर पाठ को रटना और उन्हीं शब्दों में इम्तहान में उलटी कर देना, यही काम हमारे दिग्गज शिक्षाविद् कर रहे हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता का शिक्षा की स्थिति पर एक सटीक और पैना व्यंग्य जो आपकी अंतड़ियों को झकझोर देगा।

17. विज्ञान के प्रयोग - कीथ वॉरेन

सहयोग राशि: 10 रुपये

पृथ्वी गोल है इसका अंदाज बच्चे एक टूटे मटके से लगा सकते हैं। इस पुस्तक में कई सस्ते, बिना लागत के वैज्ञानिक प्रयोग सुझाए गए हैं। कीथ वॉरेन यूनिसेफ के परामर्शदाता हैं और उन्होंने बहुत श्रम और लगन से तीसरी दुनिया के शिक्षकों और बच्चों के लिए इन रोचक प्रयोगों को संजोया है।

18. खेल खेल में शिक्षा - विष्णु चिंचालकर

सहयोग राशि: 10 रुपये

यह पुस्तक हर पत्ती, टहनी, तिनके और प्राकृतिक वस्तु में विलक्षण नमूने खोजने की सूझ देती है। हमारे आसपास कला का अथाह समुद्र बिखरा पड़ा है, फिर भी हम उसे नहीं देखते हैं। इस किताब में कला को देखने का एक नज़रिया बताया गया है। इस दृष्टिकोण के हिसाब से तुच्छ वस्तु में भी कोई न कोई कला छिपी होती है। बस सच्ची आँखों से देखने की ज़रूरत है।

19. अँगूठे से चित्र - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

अँगूठे को स्टैम्प पैड पर रगड़कर इससे कागज़ पर ठप्पे बनाए जा सकते हैं। इन अँगूठों के ठप्पों से अनेकों विचित्र वस्तुएँ – जानवर, फल, फूल, पेड़, कीड़े-मकौड़े न जाने क्या-क्या बनाना संभव है। इस पुस्तक से प्रेरित होकर बच्चे अपनी कल्पना से स्वयं अनेकों नए-नए चित्र बनाएंगे।

20. रेलगाड़ी - हरीन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

सहयोग राशि: 10 रुपये

किसने नहीं सुने फिल्म 'आशीर्वाद' में अशोक कुमार द्वारा गए ये अमर बालगीत - 'रेलगाड़ी, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक-छुक, छुक, बीच वाले स्टेशन बोले रुक-रुक, रुक-रुक, रुक-रुक, रुक' और 'नानी की नाव चली, नीना की नानी की नाव चली, लम्बे सफर पर'। आज 30 साल बाद भी, बच्चे जब इन गीतों को सुनते हैं, तो मस्ती में झूम जाते हैं।

21. हिरनौटा - द्मीत्री मामिन सिबियार्क

सहयोग राशि: 10 रुपये

रूसी कहानी का हिंदी रूपांतरण। बूढ़ा शिकारी येमेल्या अपने पोते ग्रिशूक के साथ अकेले रहता है। ग्रिशूक के माँ-बाप मर चुके हैं। ग्रिशूक अपने दादा से एक नन्हे हिरन का शिकार करने का आग्रह करता है। बूढ़ा जंगल में भटकता है और अंत में उसे नन्हा-सा हिरन दिखता है। परंतु बूढ़ा उस पर गोली नहीं चलाता है। हिरन के बच्चे को देख उसे अपने अनाथ पोते की याद आ जाती है। एक मार्मिक कथा।

22. नन्हे आर्थर का सूरज - हैडजैक गुलनज़रायन

सहयोग राशि: 10 रुपये

एक अनूठी बाल-केंद्रित कहानी। आर्थर एक नन्हा लड़का है। बारिश के दिन हैं और उसकी दादी की कमर में गठिया का दर्द है। अगर धूप निकले तो दादी को कुछ चैन पड़े। आर्थर को बादलों पर बड़ा गुस्सा आता है। वो अपनी खिलौने वाली बंदूक से बादलों का सफाया करता है और फिर एक गर्म पीले सूरज का चित्र बनाता है जिसकी गर्मी से दादी की कमर का दर्द एकदम रफूचक्कर हो जाता है!

23. बच्चे और तराजू - जोस एल्सटगीस्ट

सहयोग राशि: 10 रुपये

'यूनेस्को सोर्स बुक फार साइंस इन द प्राइमरी स्कूल' से अनूदित ये सुंदर पुस्तक पहली बार हिंदी में उपलब्ध। बच्चे आम चीजों से कई प्रकार के सरल तराजू बना सकते हैं और उनसे लीवर संबंधित प्रयोग कर सकते हैं। इसमें कार्ड को संतुलित करना और मोबाईल बनाने की तरकीबें भी बताई गई हैं।

24. मेरा जादुई स्कूल - डॉ. अभय बंग

सहयोग राशि: 10 रुपये

लेखक गांधीजी द्वारा वर्धा में स्थापित बुनियादी तालीम स्कूल में पढ़े थे। यहाँ उन्होंने इस अद्भुत स्कूल के आप बीते कुछ अनुभवों को अंकित किया है। किस प्रकार उन्होंने गौशाला में पानी की टंकी बनाकर असली गणित सीखी। किस तरह उन्होंने रसोईघर में कम लागत में पौष्टिक भोजन बनाना सीखा। काश! इस प्रकार के स्कूल आज होते।

25. सडाको और कागज़ के पक्षी - ऍलिनेर कोयर

सहयोग राशि: 10 रुपये

जब हिरोशिमा पर ऍटम बम गिरा तो सडाको केवल दो साल थी थी। नौ साल बाद उसे कैंसर हो गया। अब बचने की एक ही उम्मीद थी। उसने एक हज़ार कागज़ के पक्षी मोड़ने की ठानी। क्या हुआ? क्या सडाको बच पाई? यह जानने के लिए आँखों को नम कर देने वाली यह सत्य घटना अवश्य पढ़ें। यह कहानी पूरे ज़ोर से युद्ध की खिलाफत करती है। प्रत्येक शांति-प्रेमी, अमन और चैन से जीने वाले व्यक्ति के लिए अनिवार्य पुस्तक।

26. बच्चे दर्पण और प्रतिबिम्ब - जोस एल्सटगीस्ट

सहयोग राशि: 10 रुपये

यूनेस्को परामर्शदाता द्वारा लिखी हुई इस पुस्तक में दर्पण को लेकर कई गतिविधियाँ बताई गई हैं। जब बच्चे अपने हाथों से खुद प्रयोग करते हैं तभी उनको सिद्धांत की सच्ची समझ आती है। इसमें दर्पण से करने योग्य कई मज़ेदार और रोचक गतिविधियां और क्रियाएं सुझाई गई हैं।

27. बच्चे और पर्यावरण - जोस एल्सटगीस्ट

सहयोग राशि: 10 रुपये

पर्यावरण महत्वपूर्ण है और अपने आसपास के पर्यावरण से बच्चे बहुत कुछ आसानी से और ठोस रूप में सीख सकते हैं। इस पुस्तक में अपने परिवेश को खोजने और जांचने-परखने के तरीके बताए गए हैं। कैसे पौधों और खरपतवार को इकट्ठा करें और उन्हें अलग-अलग समूहों में रखें। आज पर्यावरण-शिक्षण एक महत्वपूर्ण विषय है और यह उस विषय पर एक सरल और सुंदर पुस्तक है।

28. बच्चे और पानी - जोस एल्सटगीस्ट

सहयोग राशि: 10 रुपये

पानी एक ऐसी चीज़ है जो सामान्यत: सभी जगह उपलब्ध है। पानी से बच्चे अनेकों वैज्ञानिक प्रयोग कर सकते हैं। जब बच्चे पानी से खेलेंगे तभी वे पानी के गुणधर्मों से अच्छी प्रकार अवगत हो पाएंगे। इस पुस्तक में कम खर्चे, और सस्ते, आसानी से उपलब्ध सामान से प्रयोग करने के तरीके सुझाए गए हैं।

29. खुशियों का स्कूल - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

लेनिन का बचपन, प्रेस्टोली स्कूल, टेडी ओनील, 'बाल हृदय की गहराईयों में' के वसीली सुखेम्लींसकी, जॉन होल्ट, मिराम्बिका, हेलन केलर, गांधीजी, सृजना स्कूल, जवाहरलाल नेहरु, पार्क स्कूल के अनुभवों और अन्य प्रेरक प्रसंगों का संग्रह।

30. आँखों की चमक - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

मॉरिया मांटेसरी, गिजुभाई, ए.एस.नील का स्कूल समरहिल, सिल्विया ऍश्टन वार्नर, लक्ष्मी आश्रम, नानतिन बाड़ी, अंतोन मकारेंको की गोर्की कालोनी, जानुज़ कोचार्क, जॉन होल्ट, गांधीजी आदि महान शिक्षाविद्‌ों के प्रयोगों की झलकियां।

31. जार्ज वाशिंगटन कार्वर - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

एक महान नीग्रो वैज्ञानिक के अथक प्रयासों की अमर कथा। अनाथपन, गरीबी, रंगभेद के तीखे प्रहारों को झेलते हुए भी कैसे कार्वर ने अपनी इंसानियत को बरकरार रखा और हमेशा दूसरों की भलाई के लिए काम किया। कार्वर ने अमरीका में मूंगफली से लगभग 300 व्यंजन बनाए। कार्वर ने गांधीजी के साथ भी पत्र व्यवहार किया। उनका प्रेरक जीवन दुनिया भर के दलितों का हमेशा मार्गदर्शन करता रहेगा।

32. बोबक बकरा - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 10 रुपये

बोबक बकरा, नेताओं के पीछे-पीछे घूमते हुए परेशान हो जाता है। अंत में वो निश्चय करता है कि अब वो एक जगह से दूसरी जगह केवल इसलिए नहीं जाएगा क्योंकि दूसरे लोग भी वहाँ जा रहे हैं। अब वो खुद सोचेगा कि उसे कहां जाना है, क्यों जाना है और कैसे जाना है। अब बोबक खुद अपने आप सोचता है। वो पहले से कहीं ज्यादा खुश है।

33. लुई ब्रेल - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

डेढ़ सौ वर्ष पहले अंधे बच्चों के पढ़ने के लिए किताबें नहीं थीं। अंधे बच्चों के लिए पढ़ने की किताबों का अविष्कार लुई ब्रेल ने किया। लुई के पिता चमड़े का काम करते थे। तीन बरस का लुई मोची के सूजे से खेलते हुए अंधा हो गया। कई वर्षों बाद उसने इसी सूजे से कागज पर छेद करके ब्रेल लिपि का आविष्कार किया। इस महान आत्मा की प्रेरक जीवनी को अवश्य पढ़ें।

34. नन्हीं राजकुमारी और चंद्रमा - जेम्स थर्बर

सहयोग राशि: 10 रुपये

प्रसिद्ध व्यंग्यकार जेम्स थर्बर की सुंदर कहानी जो बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी रास आएगी। नन्हीं राजकुमारी चंद्रमा मांगती है और उसकी जुगाड़ करने में पूरा राज्य जुट जाता है। जहां बड़े-बड़े विद्वान हार मान लेते हैं वहां दरबार का विदूषक सफल होता है। वो सफल इसलिए होता है कि क्योंकि समस्या का हल नन्हीं राजकुमारी खुद ही सुझाती है।

35. मुर्गी के चूज़े - निकोलाई नोसोव

सहयोग राशि: 10 रुपये

दो शरारती लड़के मुर्गी के अंडों को कृत्रिम रूप से सेने के लिए एक गरम डिब्बा यानी इंक्यूबेटर बनाते हैं। उनको किन-किन दिक्कतों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है और बाद में वो कैसे अपनी मंजिल तक पहुंचते हैं इसकी जबर्दस्त दास्तां। बच्चे इस सर्वश्रेष्ठ रूसी कहानी को कभी नहीं भूलेंगे।

36. एक मधुमक्खी और एक गुलाब - पीटर डीरोज़ा

सहयोग राशि: 10 रुपये

उसका कोई नाम नहीं था, सिर्फ एक नम्बर था 15/753 । वो एक गुलाम मधुमक्खी था। छत्ते के कठोर कानूनों के कारण उसे गुलामी ही अच्छी लगने लगी थी। परंतु एक दिन उसकी भेंट रोजा नाम के गुलाब से हो जाती है। उसके दिमाग में क्रांतिकारी विचार पैदा होते हैं और वो अपनी मुक्ति के लिए कदम उठाता है। मानवीय बंधनों के बावजूद मुक्ति की ललक हर इंसान में मौजूद होती है।

37. वफ़ादार हाथी - युकियो थुचिया

सहयोग राशि: 10 रुपये

युद्ध न केवल देशों और लोगों को तबाह करता है, वरन जानवरों पर भी मुसीबत और कहर बरपाता है। ये सच्ची कहानी है टोक्यो में स्थित 'यूनो' चिड़ियाघर की जहां पर द्वितीय महायुद्ध के दौरान, तीन हाथियों को भूख और प्यास से तड़पा-तड़पा कर मार दिया गया। आएं, हम लोग एक ऐसी दुनिया बनाएं जिसमें जंग न हो और लोग और जानवर अमन और चैन से जी सकें।

38. फूलों की उम्मीद - ट्रिना पौलोस

सहयोग राशि: 10 रुपये

आज हरेक कोई भाग-दौड़ में लगा है। कोई पैसे कमाने की होड़ में है तो कोई सत्ता की होड़ में। किसी को दूसरे की फिक्र नहीं है। लोग एक-दूसरे को रौंदते हुए, कुचलते हुए सफलता की सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं। परंतु सीढ़ी पर ऊपर क्या है? कुछ है भी या नहीं? लोग इसलिए सीढ़ी चढ़ रहे हैं क्योंकि बाकी सभी लोग सीढ़ी पर चढ़ रहे हैं। यह कहानी जिंदगी के बुनियादी सवालों पर प्रकाश डालती है। इस छोटी सी कहानी में आपकी जिंदगी को बदलने की ताकत है।

39. जौनाथन लिविंगस्टन सीगल - रिचर्ड बाख़

सहयोग राशि: 12 रुपये

हम अपने विचारों के बंधनों में जकड़े रहते हैं और कभी भी अपनी असली सुंदरता और प्रतिभा को नहीं पहचान पाते। दुनिया की सबसे प्रेरक पुस्तकों में, इस पुस्तक का अपना अनूठा स्थान है। 25 साल पहले छपी इस नायाब पुस्तक का दुनिया की सैकड़ों भाषाओं में अनुवाद हुआ। हिंदी में इसका यह पहला संस्करण है। सभी साहित्य प्रेमियों के लिए यह पुस्तक पढ़ना अनिवार्य है।

40. शिन की तिपहिया साइकिल - टाटसुहारू कोडामा

सहयोग राशि: 10 रुपये

ये एक ऐसी कहानी है जो बच्चों के दिलों में, हमेशा के लिए युद्ध और लड़ाई के लिए नफ़रत पैदा करेगी। लड़ाई में बड़े-बड़े नेता और फौज़ के जनरल नहीं मरते हैं। उसमें मरते हैं शिन जैसे तीन वर्ष के निरीह बच्चे। शिन अपनी तिपहिया साइकिल चला रहा था जब हिरोशिमा पर अमेरिका ने ऍटम बम फेंका। ये कहानी हमें हमेशा युद्ध के विनाश की याद दिलाएगी।

41. हिरोशिमा की आग - तोशी मारूकी

सहयोग राशि: 12 रुपये

ये एक सच्ची और दिल दहलाने वाली कथा है। हिरोशिमा पर गिरे ऍटम बम ने बेहद तबाही मचाई। पचास साल बीत चुके हैं परंतु उसकी घातक किरणों से आज भी लोग मर रहे हैं। इस कहानी को पढ़कर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। इस सशक्त कहानी को पढ़कर तमाम लोग, युद्ध से अपना नाता तोड़ेंगे और अमन-चैन तथा शांति के कामों में हाथ बंटाएंगे।

42. चूहे और चूहे - जे.बी.एस. हैल्डेन

सहयोग राशि: 10 रुपये

विश्व विख्यात ब्रिटिश जीवशास्त्री हैल्डेन ने अपने जीवन के अंतिम दस साल भारत में बिताए। उनका देहांत भुवनेश्वर में हुआ। उन्होंने अपने जीवन में बच्चों के लिए एक अमर पुस्तक लिखी - 'माई फ्रेंड मिस्टर लीकी' जो 1928 में छपी। इसी पुस्तक की एक अद्‌भुत कहानी है 'चूहे और चूहे'। इसे आप कभी नहीं भूल पाएंगे।

43. जिसने उम्मीद के बीज बोये - ज्याँ गिओनो

सहयोग राशि: 12 रुपये

दुनिया की सबसे मशहूर ग्रीन क्लासिक। एक अनपढ़ गडेरिए की कहानी जो अपनी लगन से एक बियाबान इलाके में बीज बो कर एक पूरी पथरीली पहाड़ी को हरा-भरा कर देता है। इस जादुई किताब को पढ़कर असंख्यों लोगों ने पेड़ लगाए हैं। दुनिया की महान प्रेरणास्पद पुस्तकों में अनूठी। किसी भी संवेदनशील इंसान के लिए इस पुस्तक को पढ़ना अनिवार्य है।

44. कूकू और भूरी - लीसा अर्नस्ट

सहयोग राशि: 10 रुपये

दो झगड़ालू मुर्गियों की कहानी जिसका फायदा एक कुत्ता उठाता है। कुत्ता उनके सभी अंडे खा जाता है। अंत में केवल एक ही अंडा बचता है। कूकू और भूरी अपने इकलौते चूज़े को बड़े प्यार से पालती पोसती है। नये युग की नई कथा।

45. खुशहाल बच्चे - शोभा भागवत

सहयोग राशि: 12 रुपये

पुणे के बालभवन में पिछले 20 वर्षों से बच्चों के बीच काम करने के सकारात्मक अनुभव का ब्यौरा। बच्चों के साथ की गई अनेकों गतिविधियों का वर्णन। खेलना और हम उम्र बच्चों की संगति, बच्चों के लिए क्यों आवश्यक है? किस प्रकार गली-मुहल्लों में बच्चों के खेलने की व्यवस्था की जा सकती है? शिक्षा और बच्चों में रुचि रखने वाले हरेक व्यक्ति के लिए अनिवार्य पुस्तक।

46. अंडे से चूज़ा - मिलसेंट सेल्सेम

सहयोग राशि: 12 रुपये

अंडों में से चूज़े निकलते हैं, यह तो हरेक किसी को पता है। इस पुस्तक में अंडे से चूज़ा बनने के विकास की क्रमबद्ध कहानी को चित्रों में दर्शाया गया है। अंडे के अंदर 21 दिनों तक हो रहे परिवर्तनों का सिलसिलेवार चित्रात्मक ब्यौरा है। जन्म से पहले मछली, चूज़े और मनुष्य के भ्रूण देखने में लगभग एक जैसे लगते हैं, परंतु बड़े होकर वे एकदम भिन्न हो जाते हैं। विज्ञान की इस रोचक पुस्तक में आपको बेहद मज़ा आएगा।

47. रिमझिम करती बारिश आई - एक अफ्रीकी लोककथा

सहयोग राशि: 10 रुपये

एक अफ्रीकी लोककथा का छंदों में रूपांतरण। एक बार अफ्रीका के जंगलों में भयानक सूखा पड़ता है। घास सूख जाती है। मवेशी मरने लगते हैं। सभी ओर त्राहि-त्राहि मच जाती है। तब वीर किपाट एक तीर चलाकर काले-काले बादलों में छेद करता है और उनसे रिमझिम करती हुई बारिश आती है, जिससे घास हरी-भरी हो जाती है और खुशहाली छा जाती है।

48. कूड़ा-कचरा - लौरी बेकर

सहयोग राशि: 10 रुपये

आज की उपभोक्ता संस्कृति का एक ही नारा है 'खरीदो और फेंको'। इससे एक ओर कचरे और मलबे के ढेर बढ़ रहे हैं तो दूसरी ओर पर्यावरण में ज़हर घुल रहा है। हम चाहें तो इस स्थिति से निबट सकते हैं। परंतु इसकी शुरूआत हमें स्वयं करनी होगी- खुद अपने घर से।

49. फरडीनैंड की कहानी - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 12 रुपये

फरडीनैंड एक बैल है। लड़ाई-झगड़ा उसे एकदम नापसंद है। उसे शांति प्रिय है। लड़ाई के मैदान में सिपाही उससे लड़ने के लिए भाले और तलवारें तानें हैं। परंतु फरडीनैंड लड़ता नहीं हैं। वो मैदान के बीच बैठकर औरतों के बालों में लगे फूलों की खुशबू सूंघता है। अंत में उसे घर वापिस भेज दिया जाता है। 1936 में लिखी इस क्लासिक पुस्तक में शांति का एक गहरा संदेश छिपा है।

50. जौनी ऍपिलसीड की कहानी - अलीकी

सहयोग राशि: 10 रुपये

जौन चैपमैन ने 225 साल पहले अमरीका के कोने-कोने में लाखों सेब के पेड़ लगाए। लोग प्यार से उन्हें जौनी ऍपिलसीड के नाम से बुलाने लगे। उनका पेड़ लगाने का मुहिम सारी दुनिया के प्रकृति-प्रेमियों को हमेशा प्रेरित तथा उत्साहित करेगा।

51. संयुक्त राष्ट्र के तीन वादे - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 12 रुपये

संयुक्त राष्ट्र क्यों, कब और कैसे बना? चित्रों से भरी बेहद रोचक कहानी। संयुक्त राष्ट्र ने दुनिया के लोगों से तीन वादे किए थे - 1. युद्ध बंदी। 2. सभी इंसानों के साथ सम्मानजनक व्यवहार। 3. जानकारी को सबके साथ बांटकर सभी का जीवन-स्तर बेहतर बनाना।

इन तीनों वादों को पूरा करने के लिए संयुक्त राष्ट्र आज भी दिन-रात काम कर रहा है।

52. बिनी के जानवर - मिलसेंट सेल्सैम

सहयोग राशि: 10 रुपये

चीज़ों को अलग-अलग समूहों में बांटना विज्ञान की एक महत्वपूर्ण कुशलता है। इस पुस्तक में जिज्ञासु बिनी अपनी अटकलें लगाकर विभिन्न प्रकार के जानवरों को अलग-अलग गुटों में बांटता है। इसमें म्यूजियम के प्रोफेसर वुड उसकी मदद करते हैं।

53. लड़की क्या है? लड़का क्या है? - कमला भसीन

सहयोग राशि: 12 रुपये

लड़की क्या है? लड़का क्या है? इस बारे में बरसों से चली आ रही रूढ़ीवादी मान्यताओं को यह किताब दुत्कारती है। इसमें बेटियों की ज़िंदगी में नाइंसाफी खत्म करने की कोशिश की गई है। कोशिश इस बात की है कि लड़के-लड़कियां, औरतें और मर्द बराबरी के माहौल में मिल-जुलकर आगे बढ़ें और एक नए समाज की संरचना करें।

54. पढ़ने का मज़ा - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 10 रुपये

पेट के लिए खाना ज़रूरी है तो दिमाग के लिए पढ़ना। इसलिए पढ़ना सीखो और किताबों से दोस्ती बनाओ। किताबें तुम्हारी ज़िंदगी को खुशी और उमंग से भर देंगी। किताबों में तुम एलिस के साथ, अजूबे लोक की सैर कर सकते हो, और रॉबिनहुड के साथ दूर-दराज़ के देशों में घूम सकते हो।

55. विज्ञान का मज़ा - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 12 रुपये

रटने से बच्चे ऊब जाते हैं। विज्ञान का मज़ा है प्रयोग करने में। खुद के लिए नायाब खिलौने बनाने में। विज्ञान के लिए मंहगे उपकरण की ज़रूरत नहीं होती। बच्चों के लिए पूरी दुनिया ही एक बड़ी प्रयोगशाला है। हम फेंकी हुई चीज़ों से रोचक विज्ञान के प्रयोग कर सकते हैं। आज के युग में विज्ञान को जानना और समझना बेहद जरूरी है। विज्ञान के बिना ज़िंदगी अधूरी है।

56. प्राचीन और नवीन - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 10 रुपये

सैकड़ों-हज़ारों साल पहले लोग गुफाओं में रहते थे। उन्हें खाने को बहुत कम मिलता था। लोग कम-उम्र में ही बीमारियों से मर जाते थे। आज विज्ञान की तरक्की ने हमारे जीवन को सुखी और खुशहाल बनाया है। आज हमें तमाम साधन-सुविधाएं उपलब्ध हैं। पुराने ज़माने में लोग उनके बारे में सोच भी नहीं सकते थे। प्राचीन और नवीन की कहानी इसी सच को उजागर करती है।

57. पांच चीनी भाई - क्लैर हचिट बिशप

सहयोग राशि: 10 रुपये

पांच चीनी भाई थे। देखने में बिल्कुल एक समान। एक भाई को मौत की सज़ा सुनाई जाती है। एक भाई, दूसरे की जगह ले लेता है। किसी को भी उस पर शक नहीं होता है। हर भाई में एक विशेष गुण होता है। इस तरह निर्दोष भाई बच जाते हैं और बाकी जीवन अपनी मां के साथ खुशी-खुशी बिताते हैं। एक सदाबहार कहानी जो बच्चों को बेहद पसंद आएगी।

58. पृथ्वी के रहस्य - आईका सुबोटा

सहयोग राशि: 12 रुपये

इस मार्मिक किताब में, बारह साल की जापानी लड़की आईका, दुनिया के बिगड़ते पर्यावरण की ओर सभी का ध्यान आकर्षित करती है। वो चाहती है कि सभी लोग फिज़ूलखर्ची कम करें और अपनी ज़रूरतों पर लगाम लगाएं जिससे कि दुनिया में कचरे और मलबे के ढेर कम हो।

59. मददगार हाथ - सुज़ाना हैल्डेन

सहयोग राशि: 10 रुपये

नदी में छलांग लगाते हुए ग्रेग का सिर पत्थर से टकराया। जिससे उसके हाथ-पैर पूरी तरह से चलना बंद हो गए। ग्रेग अब व्हील-चेयर पर अपनी ज़िंदगी गुज़ारेगा। उसकी मदद करती है विली नाम की एक मादा कापूचिन बंदर। वो ग्रेग को खाना-पानी देती है, उसकी पीठ खुज़लाती है और उसके अनेकों अन्य काम करती है। ग्रेग पूरी तरह से विली पर निर्भर है। 'हैल्पिंग हैंड्स' नामक संस्था ग्रेग जैसे विकलांग लोगों की मदद के लिए विशेष बंदरों को ट्रेनिंग देती है। यह एक सच्ची और मार्मिक कहानी है।

60. मेरी बहन सुन नहीं सकती - जीन वाईटहाउस पीटरसन

सहयोग राशि: 10 रुपये

यह कहानी एक छोटी लड़की की है। वो बचपन से ही बहरी है - यानि बहुत कम सुन पाती है। वो कई काम कर पाती है, परंतु कुछ चीज़ें उससे नहीं होती हैं। वो टेलीफोन की आवाज़ नहीं सुन सकती है। परंतु भयंकर तूफान में भी वो गहरी नींद सोती है। बहरे लोगों के कान तो नहीं दुखते हैं। परंतु अगर कोई उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाए तो उन्हें अवश्य दुख होता है।

61. नीलबाग के डेविड - एस. आनंदलक्ष्मी, रोज़लिंड विल्सन

सहयोग राशि: 12 रुपये

ज़्यादातर स्कूल बच्चों के लिए एक कच्ची जेल होते हैं। परंतु डेविड का नीलबाग स्कूल कुछ अलग ही था। अपने देश में, गांव के बच्चों को, विश्व-स्तर की उम्दा और क्वालिटी शिक्षा देने का नीलबाग अपने जैसा एक अनूठा प्रयास था। स्कूल जाएं या न जाएं, इस बात का निर्णय नीलबाग में बच्चे खुद ही लेते थे। बच्चों को अपनी मनमर्ज़ी के विषय चुनने का अधिकार था। बच्चे खुद की क्षमता और गति के अनुसार चीज़ों को सीख सकते थे। नीलबाग में पढ़ाई के साथ-साथ बच्चे मिट्टी, लकड़ी और तमाम हस्तकलाएं और कुशलताएं सीखते। नीलबाग का प्रयोग, डेविड ऑसबर्ॉ की, लीक से हटी ज़िंदगी की कहानी जैसा ही है।

62. मारी क्यूरी - गीता बंदोपाध्याय

सहयोग राशि: 12 रुपये

मादाम क्यूरी एक चर्चित तथा विश्वविख्यात नाम है। मादाम क्यूरी एक ऐसी महिला थीं जिन्होंने अनेकों रुकावटों को लांघकर विश्व में एक सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक के रूप में अपने को स्थापित किया और दिखाया कि 'वैज्ञानिक' फ्रेम में भी एक प्यारा-सा हंसता हुआ भोला चेहरा भी अच्छी तरह फिट होता है। उन्हें दो बार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

63. शैतान चूहे - जॉन योमैन

सहयोग राशि: 10 रुपये

यह एक दिलचस्प कहानी है। शैतान चूहे, कंजूस आटा चक्की के मालिक को चकमा देने में सफल होते हैं। चूहे अपनी सूझ-बूझ से एक चितकबरी बिल्ली की जान बचाते हैं। बाद में बिल्ली, चूहों की दुश्मन की बजाए, उनकी आजीवन दोस्त बन जाती है।

64. पत्तों का चिड़ियाघर - अरविन्द गुप्ता

सहयोग राशि: 10 रुपये

पेड़ों के पत्तों को इकट्ठा करके, उनको कागज़ पर चिपकाकर अनेकों जानवर बनाना संभव है। कोई पत्ता पांव बनेगा तो कोई पेट। इस बिना लागत की कला से बच्चों की सृजनशीला में चार चांद लगेंगे।

65. ऊँची उड़ान - शिर्ले ह्यूज़

सहयोग राशि: 12 रुपये

एक जिज्ञासु, नन्हीं बच्ची की अनूठी कथा। इसमें कल्पनाशीलता, विज्ञान, रोमांच के साथ-साथ बालमन का अद्‌भुत चित्रण है। दुनिया की यह महान चित्रकथा आपका मन मोह लेगी। इसके आकर्षक चित्रों को आप बार-बार देखना चाहेंगे।

66. चलें, कुछ अच्छा करें - मनरो लीफ

सहयोग राशि: 12 रुपये

पुरानी गुफाओं से आजकी ऊंची अट्टालिकाओं तक हमने काफी प्रगति की है। अनाज की पैदावार बढ़ी है, लोगों की सेहत बेहतर हुई है, और खुशहाली बढ़ी है। लेकिन हमने अपना लालच और स्वार्थ अभी तक नहीं छोड़ा है। आज दुनिया के आधे से ज़्यादा वैज्ञानिक हथियार और बम बनाने के काम में लगे हैं। दुनिया तीसरे महायुद्ध की कगार पर खड़ी है। दुनिया के सभी नेक और भले लोगों को इस जंग से बचने के लिए मिल-जुलकर शांति के लिए काम करना पड़ेगा।

67. आखिरी फूल - जेम्स थर्बर

सहयोग राशि: 10 रुपये

दुनिया में ज़्यादातर लोग शांति और प्रेम से जीना चाहते हैं। लोग एक-दूसरे को चाहते हैं और प्रकृति से प्रेम करते हैं। परंतु कुछ ताकतें उन्हें हमेशा जंग की आग में झोंकती हैं। इस पुस्तक में दूसरे या तीसरे नहीं, बल्कि बारहवें विश्वयुद्ध की कल्पना की गई है। यह पुस्तक धर्म और युद्ध के ठेकेदारों के मुंह पर एक करारा तमाचा है।

68. क्या तुम मेरी मां हो? - पी. डी. ईस्टमैन

सहयोग राशि: 10 रुपये

बच्चों की सदाबहार क्लासिक। चिड़िया का एक छोटा बच्चा अपने घोंसले से गिर जाता है। फिर वो अपनी मां को खोजने निकलता है। रास्ते में उसे अनेकों रोचक अनुभव होते हैं। अंत में जब वो वापिस घोंसले में पहुंचता है तो वहां मां उसका इंतज़ार कर रही होती है।

69. एक था चूहा - मर्सिया ब्राउन

सहयोग राशि: 10 रुपये

"अगर किसी ने मुझसे यह कहने की जुर्रत की, कि मैं पहले चूहा था तो मैं उसे मार डालूंगा!" चीते में बदले जाने के बाद चूहा बहुत घमंडी हो जाता है। यह देख जादू-टोना जानने वाले बूढ़े साधु ने चीते को फिर से चूहे में बदल दिया। क्योंकि उसी साधु ने उस छोटे चूहे को पहले बिल्ली, फिर कुत्ते और फिर एक घमंडी चीते में बदला था।

70. हेलन केलर की आत्मकथा - हेलन केलर

सहयोग राशि: 12 रुपये

हेलन केलर ने बीमारी से बचपन में ही अपनी आंखों की रोशनी और सुनने की क्षमता खो दी थी। अपनी शिक्षिका ऍन सुलीवन के अथक प्रयासों के द्वारा उन्होंने पढ़ना-लिखना और बोलना सीखा। बाद में वे विश्वविख्यात हुईं। हेलन केलर की आत्मकथा हर मनुष्य के लिए एक प्रेरणा का स्रोत है। इस विलक्षण महिला और उसकी अद्वितीय टीचर को लोग सदा-सदा के लिए याद रखेंगे। उनके जीवन की इस कहानी में हरेक इंसान के लिए एक सबक है - अगर मनुष्य चाहे तो बड़ी-से-बड़ी बाधा पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। यह कॉमिक पुस्तिका बच्चों और बड़ों सभी को पसंद आएगी।

71. सच्चे बच्चे, अच्छे बच्चे - फड क्वो-ल्याङ

सहयोग राशि: 12 रुपये

ये चित्रकथाएं एक छपाई-मज़दूर की रचनाएं हैं जिनमें चीनी बच्चों के दैनिक जीवन की मनमोहक तस्वीर खींची गई है। इन चित्रों में यह दर्शाया गया है कि चीन में बच्चे किस तरह एक-दूसरे की मदद करने को तत्पर रहते हैं और किस तरह वो समूह से प्यार करते हैं।

72. सचित्र कहानियां - निकोलाई रादलोव

सहयोग राशि: 10 रुपये

इस बाल केंद्रित पुस्तक की सचित्र कहानियां बच्चों के लिए आनंद और आश्चर्य से भरी हैं। इन कहानियों में बच्चों को कुछ पढ़ाने या सिखाने की कोशिश नहीं की गई है। न ही इनमें ऊपर से आदर्श थोपे गए हैं।

73. एलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल -

सहयोग राशि: 10 रुपये

आज दुनिया में टेलीफोनों का जाल बिछा है। सूचना क्रांति में टेलीफोनों का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। महानगरों से लेकर छोटे-छोटे गांवों और कस्बों तक में पीसीओ बूथ खुले हैं जहां कोई भी आम इंसान जाकर टेलीफोन का इस्तेमाल कर सकता है। एलेक्ज़ेंडर ग्राहम बेल ने आज से लगभग 120 वर्ष पहले टेलीफोन का आविष्कार किया था। इस कॉमिक पुस्तक के माध्यम से बच्चे टेलीफोन के आविष्कार की कहानी को बड़ी सरलता से समझ सकते हैं।

74. बोलते पत्थर - अबुलफ़ज़्ल हिम्माती-ए अहूई

सहयोग राशि: 10 रुपये

पत्थर वाकई में बोलते हैं। आप नदी के किनारे से छोटे और चिकने पत्थर जमा करके उनसे बेहद सुंदर पक्षी और जानवर बना सकते हैं। पत्थरों को आपस में चिपका कर और रंग करके अनेकों पक्षियों और प्राणियों के मॉडल बनाना संभव है।

75. इठलाती गुठली - मरियम रहमाती इवनि

सहयोग राशि: 10 रुपये

फल खाने के बाद हम अक्सर उनके बीज और गुठली फेंक देते हैं। पर उन बीज़ों से अनेकों कलाकृतियां बनाना संभव है। बीजों को आपस में चिपका कर आप भिन्न-भिन्न जानवरों की आकृतियां बना सकते हैं।

76. लाल गुब्बारा - एल्बर्ट लैमोरिस

सहयोग राशि: 12 रुपये

दिल को छू लेने वाली एक मार्मिक कहानी। एक संवेदनशील लड़के और उसके प्रिय लाल गुब्बारे की अमर दोस्ती की दास्तां। परंतु यह दोस्ती कुछ बदमाश लड़कों को पसंद नहीं आती। बाद में क्या होता है ... जानने के लिए आगे पढ़ें। इस कहानी पर आधारित एक सुंदर फिल्म भी बनी है।

77. जादुई बीज - मित्सुमासा ऐनो

सहयोग राशि: 12 रुपये

यह कहानी जैक नाम के एक मस्तमौला इंसान की है। एक जादूगर उसे दो जादुई बीज देता है। जैक एक को खाता है और फिर उसे साल भर भूख नहीं लगती। दूसरे बीज को वो बो देता है। अगले साल फिर दो बीज पैदा होते हैं। जैक एक को खाता है और दूसरे को बोता है। एक बार जैक दोनों बीजों को एक-साथ बो देता है। यहीं से असली कहानी शुरू होती है। गणित कहानी को आगे बढ़ाती है या कहानी गणित को, इसका निर्णय आप खुद करें। दुनिया की एक महान कृति।

78. व्हील-चेयर ही मेरे पैर हैं - ऐंग्रेट रिट्टर फ्रैंज़-जोसेफ ह्वैंग्

सहयोग राशि: 40 रुपये

मारगिट एक छोटी सी लड़की है। वो चलने में असमर्थ है। व्हील-चेयर ही उसके पैर हैं। उसके दिल में ज़िंदगी जीने की उमंग है। वो सुपर मार्केट जाती है, जहां उसे कई खट्टे-मीठे अनुभव होते हैं। वो चाहती है कि लोग उस पर तरस न खाएं और उसके साथ अन्य बच्चों जैसा ही व्यवहार करें। अंत में उसे एक दोस्त मिलता है जिसके साथ खेलकर उसे बेहद खुशी मिलती है।

79. खतरा: स्कूल! - रूपांतरकार- विनोद रायना

सहयोग राशि: 50 रुपये

स्कूली व्यवस्था को बेनकाब करने वाली दुनिया की सबसे सशक्त पुस्तक। ब्राजील के मशहूर राजनैतिक कार्टूनिस्ट क्लौडियस के तीखे कार्टून। हर माँ-बाप के पढ़ने योग्य, कम-से-कम ये जानने के लिए कि स्कूल उनके बच्चों के साथ किस प्रकार का सलूक करते हैं।

80. नन्हा राजकुमार - सैंतेक्जूपेरी

सहयोग राशि: 40 रुपये

नन्हा राजकुमार का लेखक सैंतेक्जूपेरी एक पायलट था। कहानी भी एक पायलट की है। पायलट की भेंट रेगिस्तान में एक नन्हें राजकुमार से होती है। पायलट अपना रास्ता भटक गया है - मौत उसके सामने खड़ी है। लेखक ने जब यह उपन्यास लिखा तब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था।

पिछले पचास से भी अधिक वर्षों में इस उपन्यास को विश्व के करोड़ों बच्चों व बड़ों ने अनेक भाषाओं में पढ़ा है। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। इसमें चित्र भी लेखक ने ही बनाए हैं। चित्रों के लिए हम पिकोलो प्रकाशन के आभारी हैं।

81. बहुरूप गांधी - अनु बंद्योपाध्याय

सहयोग राशि: 65 रुपये

अनु बंद्योपाध्याय द्वारा रचित पुस्तक **बहुरूप गांधी** एक नायाब कृति है।

गांधीजी के ऊपर शायद बच्चों के लिये ऐसी पुस्तक पहले कभी नहीं लिखी गयी। इस पुस्तक की कल्पना एकदम निराली है। 1964 में जवाहरलाल नेहरू ने इस पुस्तक की प्रस्तावना में लिखा: 'गांधीजी की कितनी अलग-अलग चीजों में रुचि थी, यह देखकर ही ताज्जुब होता है। और जब वो किसी काम में रुचि लेते थे तो वो उसे पूरी निष्ठा से करते थे। वो कभी भी किसी काम को सतही रूप से नहीं करते थे। खासकर वो जिंदगी की छोटी-छोटी चीजों को पूरी लगन से करते थे। यह उनकी गहरी इंसानियत का द्योतक था। यही उनके चरित्र का आधार था।' पुस्तक में 28 अध्याय हैं। हरेक अध्याय साधारण चीजों के प्रति इस असाधारण व्यक्ति का नजरिया दर्शाता है। कुछ अध्यायों के नाम इस प्रकार हैं: मजदूर, वकील, दर्जी, धोबी, नाई, मेहतर, चमार, नौकर, रसोइया, डाक्टर, नर्स, टीचर, बुनकर, कतैया, बनिया, किसान, भिखारी, कैदी, जनरल, लेखक, पत्रकार, प्रकाशक, फैशन-डिजायनर, सपेरा आदि। इस पुस्तक में गांधीजी के कुछ अनूठे चित्र भी हैं। कुछ चित्रों को प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट आर.के. लक्ष्मण ने बनाया है, बाकी को निकी थॉमस ने।